यन्त्र-साधना

(131 दुर्लभ यन्त्रों का अनुपम संग्रह)

योगेश्वरानन्द एवं सुमित गिरधरवाल

यन्त्र-साधना
योगेश्वरानन्द एवं सुमित गिरधरवाल

यन्त्र-साधना

(131 दुर्लभ यन्त्रों का अनुपम संग्रह)

(YANTRA-SADHANA)

लेखक एवं संकलयिता

योगेश्वरानन्द एवं सुमित गिरधरवाल

प्रकाशक

आस्था प्रकाशन मन्दिर

दिल्ली बागपत

दो शब्द

सामान्यतः जन-साधारण यन्त्रों को मन्त्रों से पृथक समझते हैं, जबकि यह त्रुटिपूर्ण है। ये पृथक कदापि नहीं है। यन्त्र यदि शिवरूप है तो मन्त्र उनकी अन्तर्निहित शक्ति है, जिससे वे स्वयं संचालित हैं। संक्षेप में शिव का अर्थ ब्रह्माण्ड में स्थित ऊर्जा से है, जिसका कोई स्वरूप नहीं है। जबकि प्रकृति शक्ति साक्षात् है। इस ऊर्जा को साकार रूप देने में प्रकृति ही सहभागी होती है। बिना प्रकृति (शक्ति) के शिव केवल शव के समान हैं। प्रकृति में स्थित पंच तत्त्व ही ब्रह्माण्डीय ऊर्जा को साकार स्वरूप देने में समर्थ है। इस प्रकार शिव और शक्ति दोनों ही परस्पर पूरक हैं। यह विश्व इन दोनों के सहयोग से ही संचालित होता है। मानव शरीर इस ब्रह्माण्ड का सूक्ष्म रूप है, जो शिव और शक्ति के संयोग से संचालित होता है। मनुष्य की आत्मा शिव द्वारा और उसका मस्तिष्क एवं शरीर प्रकृति द्वारा संचालित होता है। इस प्रक्रिया में अनेकों बार मस्तिष्क और शरीर मौलिक सुख-दुख के लिए आत्मा पर वर्चस्व कायम कर लेते हैं जिसके कारण आत्मा कर्मबंधन में बँधकर जीवन-मरण के चक्र में फँसकर रह जाता है। इसलिए शिव और शक्ति का सन्तुलन आवश्यक है। यदि ये दोनों सन्तुलित हैं तभी आत्मा जीवन-मरण के चक्र से मुक्त हो सकता है।

हमारे ऋषि-मुनि गहन बौद्धिक क्षमता से परिपूर्ण थे। उन्होंने विभिन्न आध्यात्मिक अन्वेषण किए और मानव को जीवन-चक्र से मुक्त करने अर्थात् शिव और शक्ति का सामंजस्य बनाए रखने के लिए अनेक विधियों का प्रतिपादन किया, जिनमें यन्त्र, मन्त्र एवं तन्त्र मुख्य हैं। दैवीय शक्तियों का आवाहन करने के लिए यन्त्र, मन्त्र तथा तन्त्र का प्रयोग किया जाता है। आवाहन करके उनसे अपना जीवन सुखी बनाने हेतु याचना, निवेदन किया जाता है, जिससे कि वे हमारे भौतिक, आध्यात्मिक विकास में सन्तुलन स्थापित कर सकें, शिव और शक्ति में सन्तुलन बना सकें।

मैंने पूर्व में कहा है कि मानव-शरीर ब्रह्माण्ड का सूक्ष्म रूप है। मनुष्य-देह भी एक यन्त्र ही है। विशाल ब्रह्माण्ड को सूक्ष्म रूप में अभिव्यक्त करने के लिए ही यन्त्रों का निर्माण किया जाता है। लेकिन जिस प्रकार प्राण के अभाव में शरीर निष्क्रिय रहता है, शव बनकर रह जाता है, ठीक उसी प्रकार यन्त्र ऊर्जा के अभाव में निष्क्रिय अथवा मृतावस्था में रहता है। यन्त्र के प्राण मन्त्र हैं, मन्त्र ही उनकी ऊर्जा है। देवी-देवताओं का सांकेतिक स्वरूप, अक्षरों एवं वर्णों का समावेश भी इनकी ऊर्जा ही होती है।

वास्तव में यन्त्रों में बनी आकृतियाँ विशिष्ट देवी-देवताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनके कार्य करने का सिद्धान्त आकृति, क्रिया और शक्ति पर आधारित है। इन तीनों के संयुक्त स्वरूप को ही यन्त्र का नाम दिया गया है। यन्त्र को देवी-देवताओं का निवास स्थान भी माना जाता है। इसीलिए पूर्ण शुचिता, निष्ठा के साथ ही इनमें सम्बन्धित देवता की प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है। इन सब क्रियाओं के उपरान्त ही यन्त्र की शक्ति जाग्रत होती है जो साधक को वांछित फल प्रदान करती है।

यन्त्र-रचना केवल रेखांकन मात्र नहीं है बल्कि उसमें वैज्ञानिक तथ्य भी सन्निहित है। इनमें कुछ यन्त्र रेखा प्रधान होते हैं, कुछ आकृति प्रधान और कुछ संख्या प्रधान होते हैं। कुछ यन्त्रों में देवी-देवताओं के मन्त्रों के बीजाक्षर भी होते हैं। मन्त्र-साधनाओं के माध्यम से वांछित फल की प्राप्ति के लिए अधिक समय तथा परिश्रम की आवश्यकता होती है, जबकि यन्त्र-साधना सबसे अधिक सरल विधि है। तन्त्रानुसार यन्त्र में चमत्कारिक दिव्य शक्तियों का समावेश होता है। इनकी रचना चाँदी, ताँबा, पीतल, स्फटिक अथवा स्वर्ण पत्रों पर कराई जाती है। भोज-पत्र पर भी इनका निर्माण किया जाता है। ये सभी पदार्थ कास्मिक तरंगे उत्पन्न करने और ग्रहण करने की क्षमता रखते हैं। सबसे अच्छा यन्त्र स्फटिक का समझा जाता है। परन्तु स्मरण रखें कि यन्त्र अपना कार्य तभी करते हैं जब इनका निर्माण पूर्ण शुचिता, श्रद्धा, विश्वास, पूर्ण मनोयोग और निश्चित विधि-विधान के साथ किया गया हो।

यूँ तो यन्त्र-विज्ञान की विषय सामग्री बहुत वृहत है परन्तु संक्षेप में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि जिस प्रकार मन का त्राण करने वाले को 'मन्त्र' तथा तन का त्राण करने वाले को 'तन्त्र' कहा जाता है, उसी प्रकार यन्त्रवत् (आधुनिक मशीन के समान) शीघ्रता से कार्य करने वाले रेखाचित्र तथा उनमें अंकित संकेताक्षरों तथा अंकों के संयोजन को 'यन्त्र' कहा जाता है। विभिन्न रेखाओं, कोणों, त्रिभुज, चतुर्भुज, पंचभुज, वृत्ताकार, अष्टदल तथा बिंदु आदि के द्वारा ज्यामितिय आकृति का निर्माण ही यन्त्र-रचना कहलाता है। यदि सामान्य रूप से अनभिज्ञता की दृष्टि से इन आकृतियों का अवलोकन करें तो ये व्यर्थ सी प्रतीत होती है। परन्तु मन्त्र, संख्यांक तथा देवी-देवताओं के सांकेतिक स्वरूप का संयोजन इन आकृतियों में कर देने से एक गजब की चमत्कारी शक्ति इन आकृतियों में भर जाती है। यही शक्ति किसी आधुनिक यन्त्र अथवा मशीन की भाँति मानव के हित या अहित का साधन बन जाती है।

यन्त्रों की रचना तीन प्रकार से की जाती है, यथा—

1. ज्यामितिय रचना में निश्चित अंकों को यथा-स्थान पर रखकर।
2. बीज मन्त्रों अथवा संकेताक्षरों को ज्यामितिय रचना में निश्चित स्थान पर रखकर।
3. अंकों, बीजाक्षरों अथवा संकेताक्षरों को ज्यामितिय संरचना में निश्चित स्थान पर रखकर।

मन्त्रों व अंकों के मेल से अत्यन्त ही प्रभावी यन्त्रों का निर्माण होता है, जिनका परिणाम अचूक होता है। 'बीसा', 'पंचदशी' तथा 'चौतीसा' यन्त्रों में केवल अंकों को ही यथास्थान कॉलमों में रखा जाता है, इसलिए इन्हें अंकों वाले यन्त्र कहा जाता है। इनका प्रभाव भी अत्यन्त चमत्कारी होता है।

उपर्युक्त सभी प्रकार के यन्त्रों का प्रयोग मानवता के विरुद्ध भी किया जा सकता है। लेकिन उचित यही होता है कि इनका प्रयोग मानवहित में किया जाए। इनका दुरुपयोग कदापि न किया जाए।

यन्त्र का निर्माण करते समय शुचिता, ब्रह्मचर्य अति आवश्यक है। साधक का तन व मन शुद्ध होना चाहिए। निर्माण-काल में रजस्वला स्त्री की परछाई से भी दूर रहना चाहिए। यन्त्र-रचना के समय किसी अन्य व्यक्ति से कोई बातचीत नहीं करनी चाहिए। यन्त्र-निर्माण के समय प्रदत्त निर्देशों का अक्षरशः पालन करना चाहिए।

इस विषय में बहुत अधिक न कहकर मैं केवल यही कहना चाहूँगा कि यन्त्र-विधा भी मन्त्र-विधा का ही उपजीव्य है। यदि यन्त्र-निर्माण सही ढंग से किया जाए तो निश्चय ही यह मनोवांछित फल प्रदान करने में पूर्ण सक्षम है। मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र के क्षेत्र में यद्यपि आज अनेकों ग्रन्थ उपलब्ध हैं, परन्तु जन-सामान्य के लिए उपलब्ध ग्रन्थों में सार्थकता का सर्वथा अभाव है। इस विद्या पर जो वृहदाकार ग्रन्थ उपलब्ध हैं, वे केवल बड़े-बड़े तान्त्रिकों, ओझाओं तथा ज्योतिषियों के काम की वस्तु बनकर रह गए हैं। सामान्य व्यक्ति उनका लाभ नहीं उठा सकते हैं। इन सभी तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए पूज्य गुरुदेव श्री योगेश्वरानन्द द्वारा इस ग्रन्थ की रचना की गई है। उनका प्रयास यही है कि जन-साधारण भी इस विद्या से सुपरिचित हो। जन-साधारण को यह नहीं सोचना चाहिए कि यन्त्र-मन्त्र व तन्त्र जैसी विद्याओं पर केवल पंडितों या तान्त्रिकों का ही अधिकार है। उन्हें यह भी नहीं समझना चाहिए कि मर्मज्ञ पंडित या तान्त्रिक ही इन यन्त्रों का निर्माण कर सकते हैं। यदि वे ऐसा समझते हैं तो उनकी यह धारणा सर्वथा निर्मूल है। शुद्ध तन-मन तथा शास्त्रोक्त विधि-विधान अपनाकर कोई भी व्यक्ति यन्त्र-रचना कर सकता है। अपना हित साधने के साथ-साथ वह दूसरों का भला भी कर सकता है।

इस ग्रन्थ में 131 यन्त्रों का समावेश किया गया है। सभी प्रकार के यन्त्रों का आधार विश्वसनीय है। काफी संख्या में अनुभूत यन्त्रों की प्रस्तुती भी इस ग्रन्थ की विशेषता है। काफी यन्त्र व उनकी प्रयोग विधियाँ उच्च कोटि के साधु-संन्यासियों से प्राप्त की गई हैं जो वास्तव में बहुत ही दुर्लभ हैं। श्री योगेश्वरानन्द जी के द्वारा इस ग्रन्थ के प्रकाशन का सौभाग्य हमें दिया गया उसके लिए मैं जन-साधारण एवं पाठकों की ओर से उनका आभार व्यक्त करता हूँ।

सुमित गिरधरवाल

Mob. No. : 9410030994, 9540674788
Email : sumitgirdharwal@yahoo.com

अपनी बातें, अपनों से...

मन्त्र-देवता की शक्ति, यन्त्र में केन्द्रित होकर उसे चैतन्य और जाग्रत बनाती है। उसी यन्त्र को धारण करने अथवा पूजन करने से उसके अधिष्ठाता देवता का सीधा सम्बन्ध साधक से हो जाता है, जो तीव्र गति से अपना प्रभाव दिखाता है और तुरन्त कार्य करना प्रारम्भ कर देता है। यही रहस्य है यन्त्र शक्ति का।

जन-साधारण की यह अवधारणा है कि यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र विद्या पर केवल तान्त्रिकों और पण्डितों का ही अधिकार है। केवल ये लोग ही यन्त्रों का निर्माण कर सकते हैं और उनके द्वारा दिया गया यन्त्र ही प्रभावी होगा। परन्तु उनकी यह धारणा सर्वथा निर्मूल और औचित्यहीन है। सही विधि-विधान का ज्ञान होने पर कोई भी इन यन्त्रों का निर्माण कर सकता है और स्वयं लाभान्वित होने के साथ-साथ दूसरों को भी लाभ पहुँचा सकता है।

यन्त्र-विद्या भी मन्त्र विद्या का ही एक आवश्यक अंग है। जिस प्रकार त्रुटिपूर्ण ढंग से मन्त्र जाप हो जाने पर साधक को हानि उठानी पड़ती है, ठीक उसी प्रकार त्रुटिपूर्ण ढंग से यन्त्र निर्माण करने से भी साधक को लाभ के स्थान पर हानि ही उठानी पड़ती है। अतः यन्त्र रचना भी शुद्ध एवं सात्विक तन-मन से और बताई गई विधि-विधान के साथ ही करनी चाहिए।

यद्यपि आज इस विषय पर विपुल साहित्य उपलब्ध है परन्तु वह या तो बहुत ही अव्यवहारिक है, या फिर इतना कठिन है कि सामान्य साधक उसे समझने व करने में सक्षम नहीं हो पाते। कहीं-कहीं यह इतने सूक्ष्म रूप में है कि व्यक्ति चाहते हुए भी उसकी तह तक पहुँचने में स्वयं को अक्षम पाता है।

वर्तमान समय अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त करके उसका समग्र उपयोग करने का है, फिर क्यों न हम इस विद्या का भी ज्ञान प्राप्त करके अपनी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करें। यह तो ज्ञान की वह शाखा है, जिसके बल पर भारत सम्पूर्ण विश्व का सिरमौर रहा है। परन्तु बड़े ही दुख का विषय है कि सिद्ध तान्त्रिकों ने इस विद्या को गुरु-शिष्य परम्परा पर आधारित करके स्वयं तक ही सीमित रखा। उन्होंने कभी प्रयास नहीं किया कि यह दुर्लभ और परम्परागत ज्ञान जन-साधारण तक पहुँचे। उन्हें सदैव यही भय बना रहा कि जन-साधारण तक इस विद्या का ज्ञान पहुँचते ही उनकी महत्ता कम हो जाएगी। कुछ तान्त्रिक, जिन्हें इस विद्या का आधा-अधूरा ज्ञान है, उन्होंने इसे अपना व्यवसाय बना लिया है और जन-सामान्य को दोनों हाथों से लूट रहे हैं। ऐसी स्थिति में सामान्य व्यक्ति बहुत ही असमंजस की स्थिति में है। वह किस पर विश्वास करे और किस पर अविश्वास करे, यह भी उसके सामने एक यक्ष प्रश्न है। इस विद्या की कई श्रेष्ठ व प्राचीन पुस्तकें हैं, परन्तु वे अत्यन्त ही दुर्लभ हैं। इसके अतिरिक्त वर्तमान में उपलब्ध जो भी पुस्तकें हैं, और प्रमाणित हैं, उनमें यन्त्रों का संग्रह एक ही ग्रन्थ में न होकर छिटका-छिटका-सा है।

प्रस्तुत पुस्तक 'यन्त्र-साधना' इस विद्या की पुनः स्थापना हेतु एक सबल और सार्थक प्रयास है। इस ग्रन्थ में दिए गए यन्त्र दुर्लभ पुस्तकों एवं साधु-संन्यासियों से प्राप्त किए गए हैं, जो निःसंदेह प्रामाणिक व संदेह से परे हैं। ये सभी यन्त्र अचूक हैं, आवश्यकता केवल श्रद्धा और विश्वास की है। यदि आप पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ प्रस्तुत विधि-विधान से इनका प्रयोग करेंगे तो निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी, इसमें कोई संदेह नहीं है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक में प्रस्तुत किए गए यन्त्र जन-साधारण, साधकगण व तान्त्रिकों के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होंगे। शर्त केवल आपके अन्तर में श्रद्धा एवं विश्वास की है, क्योंकि जहाँ दृढ़ श्रद्धा है, वहाँ साधन हुए बिना नहीं रहता, जैसा कि कहा भी गया है—

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥

(गीता 4/39)

आपका अपना

—योगेश्वरानन्द

Mob. No. : 9917325788, 9540674788
Email : shaktisadhna@yahoo.com
Website : www.yogeshwaranand.org
www.baglamukhi.info

अनुक्रमणिका

(i) दो शब्द 3 - 5

(ii) अपनी बातें, अपनों से... 6 - 7

(iii) यन्त्र साधना : यन्त्र क्या है? यन्त्रों की प्रकृति, यन्त्र साधना के नियम, यन्त्र-साधना का समय, यन्त्र-लेखन की विधि, यन्त्र-लेखन के मास, यन्त्र-लेखन हेतु दिनों का निर्धारण, यन्त्र-लेखन हेतु शुभ नक्षत्र, यन्त्र-लेखन हेतु कलम, दिशा, स्याही... 13 - 17

(iv) बीसा यन्त्र : लेखन-विधि, यन्त्र-विधान, बीसा यन्त्र-सिद्धि की अन्य विधियाँ, ग्रह-दोष नाशक तन्त्र। 18 - 21

(v) पंचदशी यन्त्र : सिद्धि प्राप्त हेतु यन्त्र-लेखन संख्या, प्रयोग-विधि, शत्रु-मारण, शत्रु-विक्षिप्त, वशीकरण, उच्चाटन, मोहन, यन्त्र-लेखन के दिन 22 - 26

यन्त्र एवं उनकी प्रयोग-विधि

1. श्री गणेश यन्त्र (धारण) 29
2. देह-रक्षा यन्त्र (पन्द्रह) 30
3. शिव-शक्ति बीसा यन्त्र 31
4. गोपाल यन्त्र 32
5. गीता यन्त्र 33
6. ब्रह्म गायत्री यन्त्र (पूजन), कन्या के शीघ्र विवाह हेतु तन्त्र 34 - 35
7. अनंग यन्त्र (धारण) 36
8. भगवद्-कृपा यन्त्र 37
9. श्रीराम यन्त्र (षड्वर्णात्मक), कन्या के शीघ्र विवाह हेतु तन्त्र 38 - 39
10. ज्येष्ठा लक्ष्मी पूजन-यन्त्र 40
11. शक्र वेश्म यन्त्र (त्रैलोक्य मोहिनी लक्ष्मी प्रयोग) 41 - 42
12. वसुधा लक्ष्मी पूजन-यन्त्र, स्थानान्तरण हेतु तन्त्र 43 - 44
13. लक्ष्मी बीसा यन्त्र 45
14. लक्ष्मी-प्राप्ति यन्त्र 46
15. श्री दुर्गा नवार्ण बीसा यन्त्र 47
16. शूलिनी दुर्गा यन्त्र (पूजन) 48 - 49
17. श्री दुर्गा यन्त्र (धारण) 50
18. दुर्गा यन्त्र (पूजन) 51
19. दुर्गा सप्तशती यन्त्र (शतचण्डी प्रयोग) 52

20. श्री मातंगी तन्त्र (मातंगी तन्त्र एवं कवच सहित) 53 - 55
21. दिव्य यन्त्र प्रयोग (पुत्र प्राप्ति हेतु) 56 - 57
22. बाला त्रिपुरा यन्त्र (पूजन) 58 - 59
23. बाला त्रिपुरा मन्त्र (धारण) 60
24. तारा यन्त्र (पूजन) 61
25. तारा यन्त्र (धारण) 62
26. श्मयान काली यन्त्र (पूजन) 63
27. दक्षिण काली यन्त्र (पूजन), कुछ अचूक एवं अनुभूत प्रयोग 64 - 65
28. व्यापार वृद्धि हेतु यन्त्र-1 66
29. व्यापार वृद्धि हेतु यन्त्र-2 67
30. नौकरी हेतु यन्त्र 68
31. मनोरथ सिद्धि यन्त्र 69
32. द्युत क्रीड़ा यन्त्र 70
33. गृह निर्माण बीसा यन्त्र 71
34. सिद्ध बीसा यन्त्र, व्यवसाय वृद्धि हेतु तन्त्र प्रयोग 72 - 73
35. ऋण मुक्ति बीसा यन्त्र 74
36. अभीष्ट फल हेतु यन्त्र 75
37. धन एवं संतान प्राप्ति यन्त्र 76 - 77
38. दिव्य बीसा यन्त्र 78
39. व्यापार-वृद्धि हेतु पन्द्रह का यन्त्र 79
40. व्यापार-वृद्धि हेतु सूर्य बीसा यन्त्र, दक्षिणावर्ती शंख का पूजन एवं महत्त्व 80 - 81
41. मच्छायन्त्रम् 82
42. गिर्वाण चक्र (यन्त्र) 83
43. अतुल सम्पदा प्राप्ति यन्त्र 84
44. मुकदमे में विजय प्राप्ति हेतु यन्त्र 85
45. घण्टाकर्ण यन्त्र, कुदृष्टि नाशक तन्त्र 86 - 87
46. सर्वबाधा प्रशमन यन्त्र 88
47. महाकाल यन्त्र 89
48. जयदं यन्त्र 90

49. सौभाग्य वृद्धि यन्त्र (कमलाख्या) 91
50. उच्छिष्ट पिशाचक यन्त्र 92
51. आपद् उद्धारक बटुक भैरव यन्त्र 93
52. लाभ-हानि जानने हेतु यन्त्र 94
53. इष्ट ग्रह कुमार यन्त्र 95
54. सन्तान दायक बीसा यन्त्र 96
55. सन्तानप्रद षट्कोण बीसा यन्त्र, पति पत्नी में प्रेम बढ़ाने के लिए यन्त्र एवं मन्त्र 97 - 98
56. पुत्र प्राप्ति हेतु यन्त्र 99
57. पुत्री के विवाह हेतु यन्त्र 100

नवग्रह खण्ड

58. सूर्य यन्त्र (तान्त्रिक) 101
59. चन्द्र यन्त्र (तान्त्रिक) 102
60. मंगल यन्त्र (तान्त्रिक) 103
61. बुध यन्त्र (तान्त्रिक) 104
62. बृहस्पति यन्त्र (तान्त्रिक) 105
63. शुक्र यन्त्र (तान्त्रिक) 106
64. शनि यन्त्र (तान्त्रिक) 107
65. राहू यन्त्र (तान्त्रिक) 108
66. केतु यन्त्र (तान्त्रिक) 109
67. वार्ताली स्तम्भन यन्त्र, व्यापार वृद्धि हेतु तन्त्र 110 - 112
68. स्वस्ति बीसा यन्त्र 113 - 117
69. लक्ष्मी प्राप्ति हेतु बीसा यन्त्र 118
70. सर्वसिद्धि यन्त्र 119
71. त्रिपुर भैरवी यन्त्र, कुबेर साधना का तान्त्रिक विधान 120 - 121
72. सुदर्शन महाचक्रम 122 - 123
73. सरस्वती यन्त्र, नव ग्रहों की शान्ति एवं दरिद्रता नाशक अमोघ यन्त्र 124 - 125
74. श्री विष्णु यन्त्र 126
75. नारायण बीसा यन्त्र 127

76. दत्तात्रेय यन्त्र 128 - 129
77. स्वयं सिद्ध निग्रह यन्त्र (शत्रुनाशक प्रयोग) 130
78. शत्रु-शमन एवं विजय-प्राप्ति हेतु बगलामुखी यन्त्र, माला मन्त्र 131 - 133
79. रिपुदल नाशक यन्त्र 134
80. शत्रु नाशक यन्त्र 135
81. प्राणनाशक यन्त्र, पुत्र प्राप्ति हेतु अचूक प्रयोग 136 - 137
82. सिद्ध वशीकरण यन्त्र 138
83. अधिकारी वशीकरण यन्त्र 139
84. प्रेमी वशीकरण यन्त्र 140
85. सर्व वशीकरण यन्त्र-1 141
86. सर्व वशीकरण यन्त्र-2 142
87. कामराज यन्त्र 143 - 144
88. राकेश्वरी यन्त्र 145
89. उर्वशी यन्त्र 146 - 147
90. मणिभद्र यन्त्र, शत्रु एवं बाधा निवारण हेतु बगलामुखी साधना 148 - 149
91. राज-वशीकरण यन्त्र 150
92. बन्दी की रिहाई हेतु यन्त्र 151
93. प्रेमाकर्षण यन्त्र 152
94. बन्दी मोचन यन्त्र, सर्वबाधा निवारण शिव लक्ष्मी प्रयोग 153 - 154
95. गए व्यक्ति को वापस बुलाने का यन्त्र 155
96. पति-वशीकरण यन्त्र 156
97. बुद्धि स्तम्भन यन्त्र 157 - 158
98. शत्रु-मुख स्तम्भन यन्त्र 159
99. चुगलखोर मुख स्तम्भन यन्त्र, सर्वबाधा निवारण शिव-लक्ष्मी प्रयोग, शाहतूर परी की साधना 160 - 161
100. नर-नारी विद्वेषण यन्त्र 162 - 163
101. शत्रु उच्चाटन यन्त्र प्रयोग 164 - 165
102. मुक्ति, शत्रु एवं बाधा निवारण हेतु बगलामुखी साधना, कामदेव मन्त्र प्रयोग 166
103. त्रैलोक्य उच्चाटन यन्त्र 167

104.	स्त्री-उच्चाटन यन्त्र	168 - 169
105.	प्रेत मुक्ति यन्त्र	170
106.	गर्भपात नाशक यन्त्र	171
107.	मृतवत्सा दोष नाशक यन्त्र	172
108.	गर्भ धारण यन्त्र	173
109.	प्रेत उतारने का यन्त्र	174
110.	सर्वरोग मुक्ति यन्त्र	175
111.	शिररोग निवारण यन्त्र	176
112.	भैरव यन्त्र, प्रसव वेदना निवारण प्रयोग	177 - 178
113.	नजर हटाने का यन्त्र	179
114.	प्राणरक्षक मृत्युंजय यन्त्र, गर्भ धारण प्रयोग	180 - 181
115.	मृत संजीवनी यन्त्र	182
116.	रोगनाशक मृत्युंजय यन्त्र, मनोहरी यक्षिणी साधना	183 - 184
117.	सफेद दाग ठीक होने का यन्त्र	185 - 186
118.	कुष्ठ रोग से मुक्ति हेतु यन्त्र	187
119.	मृत्युंजय शिव यन्त्र, कार्य विशेष हेतु हनुमन्त मन्त्र	188 - 189
120.	रोग मुक्ति बीसा यन्त्र	190
121.	परकाय प्रवेश यन्त्र (प्रयोग 1)	191 - 192
122.	परकाय प्रवेश यन्त्र (प्रयोग 2 से 4 तक), शत्रुहन्ता हनुम प्रयोग	193 - 197
123.	महामोहन यन्त्र	198
124.	धनप्राप्ति यन्त्र	199 - 200
125.	बगलामुखी यन्त्र (पूजन)	201
126.	शत्रु नाशक यन्त्र	202 - 203
127.	पद्मावती यन्त्र	204
128.	चौराहे की लाग हटाने का यन्त्र	205
129.	रोजगार प्राप्ति हेतु यन्त्र	206
130.	स्त्री / पुरुष वशीकरण यन्त्र	207
131.	महाविजय यन्त्र	208

यन्त्र-साधना

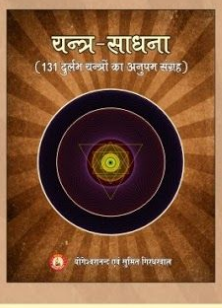

योगेश्वरानन्द

वास्तव में यन्त्रों में बनी आकृतियाँ विशिष्ट देवी–देवताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनके कार्य करने का सिद्धान्त आकृति, क्रिया और शक्ति पर आधारित है। इन तीनों के संयुक्त स्वरूप को ही यन्त्र का नाम दिया गया है। यन्त्र को देवी–देवताओं का निवास स्थान भी माना जाता है। इसीलिए पूर्ण शुचिता और निष्ठा के साथ ही इनमें सम्बंधित देवी–देवता की प्राण–प्रतिष्ठा की जाती है। इन सब क्रियाओं के उपरान्त ही यन्त्र की शक्ति जाग्रत होती है, जो साधक को वांछित फल प्रदान करती है।

ISBN: 978-93-5288-509-1

आस्था प्रकाशन मन्दिर

बागपत • दिल्ली

Mob. : 09410030994, 9540674788

Email : asthaprakashanmandir@gmail.com

www.asthaprakashan.com

To purchase this book please deposit Rs 400 in below a/c - and send us receipt on whatsapp - 9540674788 or email us asthaprakashanmandir@gmail.com
Astha Prakashan Mandir
Axis Bank. 917020072807944
IFSC Code – UTIB0001094
Branch – Baghpat (U.P.) Pin 250609

Our Books

1. Sri Baglamukhi Tantram - Rs 400/=
2. Agama Rahasya - Rs 500/=
3. Shatkarm Vidhaan - Rs 380/=
4. Pratyangira Sadhana Rahasya - Rs 400/=
5. Shodashi Mahavidya - Rs 370/=
6. Mantra Sadhana - Rs 280/=
7. Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi - Rs 350/=

Request

We are doing research in Astrology at International level and our target is to collect more than 10 Lakh correct horoscopes of different people with their basic details. Currently no research is being conducted in this field and due to that you can see that lot of incorrect predictions are being done by different astrologers worldwide. India has got well repulation in past due to research in Astronomy & Astrology by our Rishis (Sages). Since then we are following them but no further development & research is going on. So we have taken this responsibility to create a data of different people with correct information and based on that we can analyse and create new formulas to predict better and correct future events. If you want to contribute in this great work then please send us your date of birth, time & place with below details -

1. **Your height**
2. **Your Gender**
3. **Marital Status.**
4. **If married your date of marriage & other info like divorced and further marriages with dates.**
5. **No. of children with their birth details.**
6. **Your best 5 events of life with dates (5 not compulsory as much as u can provide easily and which u remember)**
7. **Your worst 5 events of life with dates**
8. **Your behavior/nature related info like do u get angry frequently or u fight with people, you have lots of enemies, you have court cases, you have lots of friends, you are cool in nature, anything like this.**
9. **Your financial status - Rich, Medium,Poor, Worst**

10. **Any other info which u think is relevant.**

If you also wish to receive valued information on mantras & astrology then please send us a request with ur email.

Email : sumitgirdharwal@yahoo.com
Phone : 9540674788 (Whatsapp)
Web : www.baglamukhi.info
Blog : shribaglamukhi.wordpress.com